श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

मास्टर ऑफ जैनिज्म् द्वितीय वर्ष-२

2024

नवम्बर -

प्रश्न - पत्र

गुणांक - ५०

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोड़ना नहीं है। ५. गलत एनरोलमेन्ट नंबर तथा नहीं समझे ऐसे एनरोलमेन्ट नंबर के १० अंक कम कर लिये जायेंगे। ६. समय पर ता. १५ मे तक पेपर नही मिले तो दूसरे १० अंक कम किये जायेंगे। ७. निबंध के मार्क्स ग्रेड पद्धति से दिये जायेंगे। ८. जवाब पत्र, निबंध में नाम, एनरोलमेन्ट नंबर, वर्ष और सत्र लिखना जरूरी है। ९. जवाब तत्वार्थ सूत्र की अभ्यास पुस्तक के अध्याय ८ से १० मेंसे लिखे जायेंगे।(पृष्ठ संख्या १९२ से)

प्रश्न नं. १ योग्य विकल्प ढूंढकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो २५

१. कीट पतंग आदि मूर्छित चेतना वाली जातियों में ही .... सम्भव है।
२. जिससे समस्त प्राणियों का कल्याण होता है ऐसे सर्वगुण सम्पन्न धर्म का सत्पुरुषों ने उपदेश किया है ऐसा चिन्तन .... है।
३. सम्यग्दृष्टि की प्राप्ति से ही यथार्थ.................. प्रारम्भ हो जाती है।
४. मलिन वृत्तियों को निर्मूल करने के निमित्त अपेक्षित शक्ति की साधना के लिये किया जाने वाला............ तप है।
५. .... की विशिष्ट रचनारुप संहनन का निमित्त कर्म संस्थान है।
६. जिनका विपाक देशविरती का प्रतिबन्ध न करके केवल सर्वविरती का ही प्रतिबंध करे वे ....क्रोध मान माया लोभ हैं।
७. कोई पास आकर कठोर या अप्रिय वचन कहे तबभी उसे सत्कार समझना............... परिषह है।
८. आगम का विशेष प्रवचन करे वह.................... आचार्य का प्रकार है।
९. कठिनाइयां आने पर विवेक का विकास करके उपस्थित कठिनाइयों को सरल बनाना ही ....का चिन्तन है।
१०. आत्मप्रदेशों के साथ.................. को प्राप्त पुद्गलों का यह सम्बन्ध ही बन्ध कहलाता है।
११. जिस ध्यान में शब्द अर्थ अथवा योगों का परिवर्तन नहीं होता वह .... ध्यान कहलाता है।
१२. जीवद्रव्य का स्वभाव................. की भांति गतिशील है।
१३. जिस कर्म के उदय से तत्वों के यथार्थ स्वरुप में रुचि न हो वह.................. है।
१४. गतिशील स्कंध................होने से बन्ध को प्राप्त नहीं होते।
१५. जो अपने सद्गुणों में श्रेष्ठ हो उसके प्रति अनेक प्रकार के योग्य व्यवहार करना................. है।
१६. पूर्व प्रयोग याने............... के छूट जाने के बाद भी उससे प्राप्त वेग।
१७. मंद या मंदतम श्वास का संचार तो .... में ही रहता है।
१८. योग के तरतमभाव पर ही .... और .... बन्ध का तरतमभाव अवलम्बित है।
१९. ज्ञानावरण कर्म का .... ज्ञान को ही आवृत करता है।
२०. जिसमें दर्शनमोह का क्षय करने योग्य विशुद्धि प्रकट होती है वह .... अवस्था है।
२१. चौदहवे गुणस्थानक में .... के समय में समुच्छिन्नक्रिया निवृति नामक चौथा शुक्लध्यान माना गया है।
२२. संसारतृष्णा का त्याग करने के लिये सांसारिक वस्तुओं में .... की साधना आवश्यक है।
२३. घृणाशीलता का जनक .... है।
२४. आस्त्रव निरोध के विकास पर .... विकास का क्रम आश्रित है।
२५. एक ही .... का शिष्य परिवार कुल है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो २५

१. अनुष्ण शरीर में उष्ण प्रकाश का नियामक कर्म कौनसा है ?
२. किन निर्ग्रन्थों का निर्वाण ही होता है ?
३. आधुनिक शोधक विद्वान वस्त्रपात्र धारण करने वाली श्वेतांबर परंपरा में किसकी सवस्त्र परंपरा का मूल देखते हैं ?
४. समुच्छिन्नक्रिया निवृति ध्यान में आत्म प्रदेश सर्वथा क्या हो जाते हैं ?
५. बंधने वाले समस्त कर्मयोग्य स्कंध कितने परमाणुओं के ही बने होते हैं ?
६. शुक्लध्यान के किस भेद का ध्यान करने वाला साधक अर्थ पर से शब्द पर, शब्द पर से अर्थ पर चिंतन के लिये प्रवृत्त होता है ?

७. भूत दृष्टि अन्तिम समय को लें तो कौनसे चारित्री ही सिद्ध होते हैं ?
८. श्रेणी का आरम्भ कौनसे गुणस्थानक से होता है ?
९. जीवन यात्रा में आवश्यक निर्दोष साधनों को जुटाने के लिये सावधानी पूर्वक प्रवृति करना क्या है ?
१०. अनादिकाल से जीव कर्म संबंधवाला होने से कैसा हो जाता है ?
११. मुख्य कषाय के सहचारी एवं उद्दीपक कौन हैं ?
१२. कौनसे कर्म का नाश हो जाने से सहज चेतना निरावरण हो जाती है ?
१३. आयुष्य की जघन्य स्थिति कितने वर्ष जीवी तिर्यंच और मनुष्य में संभव है ?
१४. किसी के द्वारा ताडन तर्जन किये जाने पर भी उसे सेवा मानना कौन सा परिषह है ?
१५. कौनसे भाव का अभाव मोक्ष में नहीं होता ?
१६. छद्मस्थ के ध्यान का कालपरिमाण कितना होता है ?
१७. पात्र को ज्ञानादि सद्‌गुण प्रदान करना क्या है ?
१८. सम्पूर्ण जीवन के लिये जो पहले पहल मुनि दिक्षा ली जाती है वह क्या है ?
१९. हुई भूल का अनुताप करके उससे निवृत्त होना और आगे भूल न हो इसके लिए सावधान रहना क्या है ?
२०. अविरत, देशविरत और प्रमत्तसंयत गुणस्थानों में कौनसा ध्यान संभव है ?
२१. कौनसे निर्ग्रन्थ तीर्थ में भी होते हैं और अतीर्थ में भी होते हैं ?
२२. भाष्य और उसकी वृति में किन्हें ध्यान का अधिकारी माना गया है ?
२३. किस निद्रा में सहज बल से अनेकगुना अधिक बल प्रकट होता है ?
२४. सकाम तप किसका साधन माना जाता है ?
२५. किस गुण की सिद्धि के लिये जाति, कुल, रुप, बुद्धि आदि की विनश्वरता का विचार करके अभिमान के कांटे को निकला फेंकना चाहिये ?

प्रश्न नं. ३ विविध ग्रंथो की सहायता से तुम्हारे शब्दों में १५ से १७ पन्नो का महानिबंध लिखो (कोई भी एक)

१. **ध्यान सर्वश्रेष्ठ तप है** (मोक्षमार्ग में तप का स्थान, तप का स्वरुप, तप के प्रकार, ध्यान, ध्यान के प्रकार, ध्यान में स्थान, समयादि का महत्व, मोक्ष दिलाने वाले ध्यान के अधिकारी, ध्यान की भावनादि)

२. **कर्म बंध से (संसार) बंधन** (संसार क्या ? कारण क्या ? कर्मबंध के प्रकार, कर्म बंध के कारण, प्रदेश बन्ध किस तरह)

३. **संयम से संवर** (योग, कषाय, इन्द्रिय और मन पर अगर संयम आये तो संवर आये, कर्म से अटके, समिति गुप्ति भावना यति धर्म, परिषय जय)

एम.जे. पार्ट -१ केन्द्रिय परिक्षा पत्र कैसा होगा ?

प्रश्न -१	रिक्त स्थान भरो	गुणांक - २०
प्रश्न -२	एक शब्द मे जवाब लिखो	गुणांक - २०
प्रश्न -३	नीचे के वाक्य सही या गलत बताईये	गुणांक - २०
प्रश्न -४	जोडियाँ लगाओ	गुणांक - २०
प्रश्न -५	एक वाक्य में व्याख्या लिखो	गुणांक - २०
	कुल	गुणांक - १००

निबंध के लिये नीचे मुजब ग्रेडिंग रहेगी

१) ४० मार्क्स के उपर A+ २) ३५ मार्क्स के उपर A ३) ३० मार्क्स के उपर B+ ४) २५ मार्क्स के उपर B
५) २० मार्क्स से कम C

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

सौ. कश्मीरा विनोद लोढ़ाया, शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद.
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com